DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-6,
SOMATOFORM DISORDERS :NATURE AND TYPES
LECTURE-52

कायाप्रारूप विकृति के स्वरूप एवं प्रकार

Nature and types of somato form disorders

कायाप्रारूप विकृति DSM-IV(TR)वर्गीकरण पद्धति का एक प्रमुख विकृति है |इस विकृति से तात्पर्य एक ऐसी विकृति श्रेणी से होता है जिसमे व्यक्ति उन दैहिक लक्षणों की शिकायत करता है जिनसे दैहिक समस्याओं की उपस्थिति का अंदाज होता है परन्तु सचमुच में इसका कोई आंगिक या कायिक आधार नही होता है | यधपि ऐसे व्यक्तियों में लक्षणों का कोई शारीरिक या कायिक आधार नही होता है परन्तु उसे ऐसा विश्वास होता है की उनके लक्षण वास्तविक ही नही परन्तु गंभीर भी है |

निम्नांकित पाँच ऐसे कसौटियाँ उपलब्ध है जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है की रोगी में कायाप्रारूप विकृति है या नहीं –

(i) रोगी के दैहिक कार्यो में कुछ परिवर्तन हुआ हो |जैसे ,उसमे बहरापन या पक्षाघात (paralysis)के लक्षण उपलब्ध हो |

(ii) ऐसे लक्षणों की व्याख्या ज्ञात दैहिक या स्नायविक हालातों के रूप में किया जाना सम्भव नही हो |जैसे ,बहरापन या पक्षाघात के उत्पन्न होने पर भी उसका कोई स्नायविक क्षति का कोई सबूत न हो |

(iii) इस बात का धनात्मक सबूत हो कि रोगी के दैहिक लक्षण मनोवैज्ञानिक कारको से संबंधित हो |

(iv) रोगी में प्राय :दैहिक क्षति के प्रति उदासीनता रहती हो अर्थात उसे अपने दैहिक लक्षणों के प्रति कोई विशेष चिंता नही हो |

(v) रोगी द्वारा दिखलाये गये चिंता उसके एच्छिक नियंत्रण के बाहर हो |

यदि किसी रोगी में उपर्युक्त पाँच कसौटियो के अनुरूप लक्षण पाये जाते है ,तो उसे निश्चित रूप से कायाप्रारूप विकृति का रोगी माना जायगा |कायाप्रारूप विकृति के मुख्य पाँच प्रकार बतलाये गये है –

(i) **शरीर दुष्क्रिया आकृति विकृति (body dysmorphic disorder)**

(ii) **रोगभ्रम (hypochondriasis)**

(iii) **कायिक विकृति (somatization disorder)**

(iv) **कायाप्रारूप दर्द विकृति (somato form pain disorder)**

(v) **रूपान्तर विकृति (conversion disordor)**

इन का वर्णन निम्नांकित है –

(i) शरीर दुष्क्रिया आकृति विकृति –इस विकृति में रोगी को अपने चेहरे में कुछ कल्पित दोष उत्पन्न हो जाने की आशंका उत्पन्न हो जाती है |जैसे सम्भव है कि रोगी को यह विश्वास हो जाए कि उसका नाक का आकार दिनों दिन बड़ा होता जा रहा है या उसके उपरी होंठ उपर की दिशा में तथा निचली होंठ निचे की दिशा में लटकता जा रहा है |इस तरह के कल्पित दोष से वह इतना अधिक चिंतित रहता है कि उसके दिन प्रतिदिन के सामाजिक जिंदगी में काफी परेशानी आ जाती है और समायोजन सम्बद्ध समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है |इस तरह की विकृति से संबद्ध कम शोध किये गये है |इस तरह की विकृति वाले अधिकतर रोगी यूरोपियन एवं एशियन देशों के मानसिक अस्पतालों में कुछ देखने को मिले है |अमेरिका में इस

तरह के रोगी न के बराबर देखे गए है |यही कारण है कि कई मनश्चिकित्सकों में इस बात पर मतभेद है कि इसे कायाप्रारूप विकृति का एक स्वतंत्र प्रकार माना जाए या नहीं |

(ii) रोगभ्रम –इस विकृति में रोगी अपने स्वास्थ्य के बारे में जरूरत से ज्यादा सोचता है तथा उसके बारे में चिंता करता है |उसके मन में अक्सर यह बात बनी रहती है कि उसे कोई –न –कोई शारीरिक व्याधि या बीमारी हो गयी है और उसकी यह चिंता इतना अधिक हो जाती है कि वह अपने दिन- प्रतिदिन की जिंदगी के साथ समायोजन करने में असमर्थ रहता है |DSM –iv (TR)की कसौटी के अनुसार इस तरह की चिंता व्यक्ति में कम –से –कम छह महीना तक बने रहने पर ही उसे रोगभ्रम की श्रेणी में रखा जा सकता है अन्यथा नही |इस विकृति में रोगी की शिकायत किसी एक अंग विशेष तक सीमित नही रहती है |

(iii) कायिकी विकृति –यह एक ऐसी कायाप्रारूप विकृति है जिसमें रोगी को बिना किसी तरह के आंगिक दोष के ही नाना प्रकार के कायिक शिकायते होती है |कहने का तात्पर्य यह है की इस रोगी को बहुकायिक शिकायते होती है जबकि दैहिक रूप से यह चंगा रहता है

|कायिक विकृति में कम-से-कम आठ तरह के लक्षण निश्चित रूप से होते है |जो इस प्रकार है –

(i) चार तरह के दर्द के लक्षण-इसमें दर्द सिर,पेट,पीठ,छाती,पेशाब करने के दौरान,मानसिक धर्म के दौरान ,लैंगिक क्रिया के दौरान आदि में से किसी चार से सम्बद्ध हो सकता है |

(ii) दो आमाशयंत्र लक्षण –कम-से-कम दो आमाशयंत्र जैसे मिचली, कै,डायरी,पेट फूलना आदि आवश्यक हुए है |

(iii) एक लैंगिक लक्षण – इसमें कम-से-कम एक लैंगिक लक्षण जैसे लैंगिक तटस्था,स्खलन समस्याएँ ,अनियमित मासिक श्राव,मासिक श्राव में अत्यधिक रक्त निकलना आदि अवश्य हुए हो |

(iv) एक कूटस्नायविक लक्षण –कम-से-कम एक कूटस्नायविक लक्षण जैसे अंधापन ,दो दृष्टी ,बहरापन ,स्पर्श ,संवेदन की कमी,विभ्रम ,पक्षाघात ,कंठ में दर्द या खाते समय निगलने में या कठिनाई पेशाब करने में कठिनाई आदि अवश्य हुए हो |

(iv) **कायाप्रारूप दर्द विकृति**– इस विकृति में रोगी गंभीर एवं स्थायी तौर पर दर्द का अनुभव करता है जबकि इस तरह के दर्द का कोई दैहिक आधार नहीं होता है इस तरह का दर्द प्रायः ह्रदय या अन्य महत्वपूर्ण अंगो के क्षेत्र से सम्बद्ध होता

है |गहन मेडिकल जांच में ऐसे रोगियों के दर्द का कोई भी स्पष्ट आधार या विकृति नहीं मिलती है |सामान्यतः इस तरह के दर्द की उत्पत्ति का संबंध किसी प्रकार के संघर्ष या तनाव से होता है या जब व्यक्ति किसी दुखद परिस्थिति से छुटकारा पाना चाहता है या अन्य लोगो की सहानुभूति या ध्यान को अपनी और खींचना चाहता है ,तो इस तरह का दर्द व्यक्ति में उत्पन्न होते देखा गया है |

(v) **रूपांतर विकृति**—कायाप्रारूप विकृतियों में सबसे सामान्य एवं प्रबल विकृति रूपांतर विकृति है जिसे पहले रूपांतर हिस्ट्रिया के नाम से जाना जाता था |फ्रायड पहले ऐसे मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने इस रोग के लिए 'रूपांतर' पद का उपयोग किया था |इनका मत था की इस रोग में व्यक्ति की दमित मूल प्रवृत्ति ,संवेदी-पेशीय लक्षणों में बदल जाते है और उनके कार्यो को अवरुद्ध कर देते है |आज भी 'रूपांतर' पद का यही अर्थ है | इस तरह से यह कहा जा सकता है की रूपांतर विकृति वैसी विकृति को कहा जाता है जिसमे व्यक्ति के तनाव,मानसिक संघर्ष आदि की अभिव्यक्ति कुछ दैहिक लक्षणों के रूप में होते है और ऐसे दैहिक लक्षणों का कोई दैहिक आधार नहीं होता है और सामान्यतः इन लक्षणों की अभिव्यक्ति उन अंगो के कार्यो में उत्पन्न अवरुद्धता के

माध्यम से होती है जो केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के नियंत्रण में होते है |